VOLUME-7, ISSUE-1, JANUARY-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Commerce

सम्प्रत्य मानचित्रण (Concept mapping) और सम्प्रत्यात्मक समझ (Conceptual understanding)

अनामिका चौहान शोधकर्ता

प्रो॰ मेहनाज अंसारी पर्यवेक्षक

ABSTRACT

शिक्षा समाज के अंदर रहकर प्रदान व प्राप्त की जाती है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों को समाज, देश व विश्व से जोड़ना है। ''सामाजिक विज्ञान'' छात्रों को समाज, देश व विश्व की जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ समाज, देश व विश्व में उनकी भूमिका से अवगत करवाता है। यही कारण है कि इस विषय के अंतर्गत पढ़ाए जाने वाले उपविषयों व सम्प्रत्यों की सम्प्रत्यात्मक समझ अर्थपूर्ण शिक्षण से ही प्राप्त होती है और अर्थपूर्ण शिक्षण प्रदान करने में शिक्षण विधि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। छात्रों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का सक्रिय अंग बना कर रचनावादी दृष्टिकोण (Constructive Approach) के अंतर्गत अर्थपूर्ण शिक्षण प्रदान किया जा सकता है। सम्प्रत्य मानचित्रण एक ऐसी ही शिक्षण विधि है जो कि छात्रों को शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय करने के साथ–साथ उनको सम्प्रत्यों की गहरी समझ प्रदान करने में भी सक्षम है।

KEYWORDS : सामाजिक विज्ञान, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शिक्षण विधि, सम्प्रत्यात्मक समझ, सम्प्रत्य मानचित्रण।

प्रत्येक समाज शिक्षा को विकास के एक महत्वपूर्ण कदम व मापदण्ड के रुप में पहचानता है। शिक्षा ही राष्ट्र को जागरूक कर स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा आदि को बनाए रखने वाले व्यवहार व सोच को विकसित करने की क्षमता रखती है। व्यक्ति–विशेष समाज में रहकर व समाज के साथ अंतर्क्रिया करके ही अपने जीवन के प्रगति–पथ का निर्माण करता है और प्रतिक्रिया स्वरूप वह भी समाज व समुदाय के विकास में अपना योगदान देता है।

सामाजिक विज्ञान एक विषय के रुप में सामाजिक व सांस्कृतिक विभिन्नताओं और उनसे जुड़ी चिंताओं को समेटे हुए हैं। इस विषय की विषय–वस्तु (content) प्राकृतिक व मानवीय इतिहास, भूगोल और सामाजिक–राजनैतिक विज्ञान से अपना आधार बना कर व्यक्ति–विशेष को व्यवहारिक जीवन से जोड़ती है।

इस विषय को पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने का विशिष्ट उद्देश्य एक न्यायपूर्ण व शांतिमय समाज की स्थापना के लिए छात्रों में आधार तैयार करना था, जिससे कि छात्र अपने वातावरण के लि, जागरूक हों सके, उसे आलोचनात्मक रुप से समझ सके और अपने आसपास घटने वाली घटनाओं व अंतर्क्रियाओं को परखने के काबिल बन सके। छात्रों में अपने वातावरण के प्रति उदासीनता व उसे अनदेखा करने की प्रवृति की जगह उनके अंदर उन घटनाओं व व्यवहार पर प्रश्न करने की जिज्ञासा का जन्म हो सके।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा (NCF) -2005 भी यही कहता है कि–

समाजिक विज्ञान विषय की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वो लोकतांत्रिक मूल्यों अर्थात स्वतंत्रता, समानता, मानवीय गरिमा, समाज में मौजूद विभिन्नताओं को सम्मान से देखने की भावना को हमारे छात्रों में जगाए और साथ ही साथ उनमें इतनी समझ पैदा करें कि वो इन लोकतांत्रिक मूल्यों के विरोधी कार्यो, व्यवहारों व शक्तियों को पहचान सके। शिक्षा गुणवत्तापूर्ण व छात्रों के जीवन व वातावरण से जुडी हो ताकी शिक्षण अर्थपूर्ण हो।

'सामाजिक विज्ञान' का अर्थपूर्ण शिक्षण–अधिगम छात्रों की चिंतन शैली, तार्किकता, न्यायपूर्ण आचरण और दूसरों के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार करने के मार्ग को प्रशस्त करता है। छठी से आठवीं कक्षा तक के छात्रों में यह विषय, समाज के बारे में समझ पैदा करता है जिससे भविष्य में वो लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ रखने वाला सक्रिय व उत्तरदायी नागरिक बन सके। 'सामाजिक विज्ञान' का शिक्षण इस प्रकार का होना चाहिए कि लोकतांत्रिक मूल्य स्वतः ही उसके व्यवहार का अंग बन जाएं क्योंकि यह वो आधार है जो कि व्यक्ति–विशेष को स्वयं को और साथ ही साथ समुदाय को भी सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने का मार्ग तैयार करता है।

सम्प्रत्य क्या है?

Concept अर्थात सम्प्रत्य एक सामान्य विचार है जो कि किसी अवधारणा की एक या उससे अधिक विशेषताओं के बारे में बताता है।

"Concept is equal to constructivism that develops new conceptual understandings, needed to build connections with other concepts that they already know."

सम्प्रत्य मानचित्रण

सम्प्रत्य मानचित्रण सम्प्रत्य का शाब्दिक रेखाचित्र होता है जो कि सम्प्रत्य को उसके विशेष बिंदुओं के साथ व्यवस्थित रुप में प्रदर्शित करता है और साथ ही साथ इन बिंदुओं का एक दूसरे के साथ के संबंधों को भी स्पष्ट करता है।

सम्प्रत्यात्मक समझ – यह छात्रों में किसी सम्प्रत्य की गहन समझ को दर्शाती है और यही समझ उन्हें सम्प्रत्यों में समानता व विभिन्नता को बताती है। एक सम्प्रत्य को दूसरे सम्प्रत्य के संदर्भ में या छात्रों के अपने जीवन कें विभिन्न पक्षो से उस सम्प्रत्य से संबंध को पहचानने के लिए प्रेरित करता है और साथ ही साथ आवश्यकतानुसार उस सम्प्रत्य को इस्तेमाल करने की व्यवहारिक समझ भी पैदा करता है।

सम्प्रत्यात्मक समझ के बारे में अंततः यह कह सकते हैं कि जब किसी सम्प्रत्य को छात्र जानते हैं, तो उसमें समानता या विभिन्नता को पहचान पाते हैं, उसे दूसरे सम्प्रत्यों या अपने वातावरण से जोड़ पाते हैं व आवश्यकता पड़ने पर उसे अपने व्यवहार का अंग बना पाते हैं। सम्प्रत्य की गहन समझ को लेकर यही पूरी प्रक्रिया ही अंततः नए सृजन के लिए आधार का कार्य करती है।

शोधकर्ता नें सामाजिक विज्ञान विषय की सम्प्रत्यात्मक समझ को पैदा करने के लिए छात्रों को इस विषय के कुछ पाठ सम्प्रत्य मानचित्रण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से पढ़ाए और पाया कि यह शिक्षण विधि इस विषय को पढाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। क्योंकि–

1. यह शिक्षण विधि छात्रों को सीधे सम्प्रत्य के मुख्य बिंदुओं व उन बिंदुओं के आपसी संबंधों के बारे में बताती है।
2. सामाजिक विज्ञान को पढाने के लिए कक्षा में जिस शिक्षण विधि का उपयोग किया जाता है वह छात्रों को सम्प्रत्य की पूर्णरूपेण स्पष्टता नहीं दे पाती है और बच्चों में उस सम्प्रत्य को लेकर विभिन्न भ्रान्तियाँ उत्पन्न कर देती है। सम्प्रत्य मानचित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सम्प्रत्य को स्पश्ट व व्यवस्थित रुप में प्रस्तुत करता है, जिससे पढाए जाने वाला सम्प्रत्य तो स्पष्ट होता ही है और साथ ही साथ छात्रों में पहले से मौजूद भ्रांतियों को भी मिटा देता है।
3. यह विषय को भारी व उबाऊ (जैसा कि हमारे छात्रों को लगता है) के स्थान पर रोचक तरीके से प्रस्तुत करता है।
4. इस विधि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह छात्रों को शिक्षण–अधिगम प्रणाली का सक्रिय अंग बनाता हैं।

अंततः निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि छात्रों में इस विषय की समझ को निर्धारित लक्ष्य तक ले जाने के लिए यह शिक्षण विधि एक माध्यम के रुप में कार्य करने में सक्षम है।

ग्रंथ सूची

1. एटकिन, जी. (2006) सिंग्लिंग शिफ्ट्स इन मीनिंगः द एक्सीपीरियन्स ऑफ सोशल स्टड्डीज करिकुलम डिज़ाइन करिकुलम मैट्रस।
2. ऑसुबेल, डी.पी. (1962). ए सबस्मपशन थ्योरी ऑफ मीनिंगफुल वरबल लर्निंग एण्ड रिटेन्शन. द जनरल ऑफ एडुकेशनल साइकोलोजी।
3. नोवेक, जे.डी. एण्ड कनेस, ए.जे. (2006) द ओरिजन ऑफ द कान्सेप्ट मैपिंग टूल एण्ड द कन्टीन्यूइंग इवोल्यूशन ऑफ द टूल. फ्लोरिडाः इंस्टिट्यूट फॉर हयूमन एण्ड मशीन कॉग्निश (IHMC)।
4. नोवेक, जे.डी. एण्ड गोविन, डी.बी. (1996). लर्निंग हाऊ टू लर्नत्र कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः न्यू यार्क।
5. डेवी, ज. (1933) हाऊ वी थिंकः मैसेच्यूसेट्सः डी.सी. हीथ एण्ड कंपनी।
6. एरिक्सन, एच.एल. (2007). कान्सेप्ट बेस्ड करिकुलम एण्ड इंस्ट्रक्शन फॉर द थिंकिंग क्लासरूम. थाउज़ेन्ड ओक्सः कारविन प्रेस।
7. गिल्बर्ट (2004). स्टडिंग सोसाइटी एण्ड एनवायरमेंटः द गाइड टू टीचर्स. मेलबार्नः थाम्सन सोशल साइन्स प्रेस।
8. गोल्डिंग, सी. (2002). कनोक्टिंग कान्सेप्शनः थिंकिंग एक्टिवटीज फॉर स्टूडेन्ट्स. कम्बरवेलः एसर प्रेस।
9. जोनेससन, डी. (2006). आन द रोल ऑफ कॉन्सेप्ट्स इन लर्निंग एण्ड इन्स्ट्रक्शनल

डिजाइन. एडुकेशनल टेक्नोलोजी, रिर्सच एण्ड डेवलपमेंट।
10. लिपमैन, एम. (2003). थिंकिंग इन एडुकेशन. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस।
11. ओ. नील. जे. (2005). गैटिंग स्टारटेड, शेपिंग सोशल स्टडीज टीचर्स थिंकिंग थ्रू फॉरमल प्रोफेशनल डेवलपमेंट. पाल्मरस्टोन नार्थ. केनका ग्रोव प्रेस, मैसी युनिवर्सिटी।
12. स्पिलंटर, एल. एण्ड शार्प, ए. (2005). टीचिंग फॉर बैटर थिंकिंगः द क्लासरूम कम्युनिटी ऑफ इंक्वायरी, हाऊथ्रान. विक्टोरियाः ऑस्ट्रेलियन काउन्सिल फॉर एडुकेशनल रिसर्च।
13. ब्लूम, बी.एस. (1956). टैक्सॉनॉमी ऑफ एडुकेशनल आब्जेक्टिव्स द क्लासिफिकेशन ऑफ एडुकेशनल गोल्स न्यूयार्कः डेविड मैक्स।